

विजयनगर साम्राज्य

(1336 ई. - 1646 ई.)

“दक्षिण की संस्कृति, शक्ति और स्वाभिमान का प्रतीक”

1 स्थापना एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि

संस्थापक :

हरिहर प्रथम और बुक्का राय प्रथम (1336 ई.)

→ दोनों मूल रूप से वारंगल के काकतीय शासक प्रतापरुद्रदेव की सेवा में थे, बाद में काम्पली राज्य के मंत्री बने।



हरिहर प्रथम

बुक्का राय प्रथम



हम्पी (विजयनगर)

पत्थरों में बसता एक महान साम्राज्य...

- भौगोलिक स्थिति :** दक्कन का पठार, तुंगभद्रा नदी का दक्षिणी तट। राजधानी - हम्पी (विजयनगर / विद्यानगर)।

- आध्यात्मिक प्रेरणा :** गुरु विद्यारण्य तथा वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण का मार्गदर्शन।



विद्यारण्य



सायण

राजकीय प्रतीक :

- राजचिह्न :** वराह (भगवान विष्णु का अवतार)



- कुलदेवता :** विरुपाक्ष (भगवान शिव का स्वरूप)



विरुपाक्ष

सभी राजकीय आदेशों पर कन्नड़ लिपि में 'श्री विरुपाक्ष' अंकित होता था।

संघर्ष का मूल कारण :

कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच का उपजाऊ **रायचूर दोआब**, कृष्णा-गोदावरी का डेल्टा तथा **मराठवाड़ा क्षेत्र** को लेकर उत्तर के बहमनी सल्तनत के साथ निरंतर संघर्ष।



कृष्णा नदी

तुंगभद्रा नदी

बहमनी सल्तनत (उत्तर में)

2 चार प्रमुख राजवंश एवं कालक्रम

संगम वंश

1336 - 1485 ई.

- संस्थापक हरिहर प्रथम और बुक्का प्रथम ने अपने पिता संगम के नाम पर इस वंश की नींव रखी।
- देवराय प्रथम और देवराय द्वितीय इस वंश के सर्वाधिक योग्य शासक सिद्ध हुए।



संगम वंश

सालुव वंश

1485 - 1505 ई.

- सालुव नरसिंह द्वारा प्रथम बलापहार (तख्तापलट) करके स्थापना।
- इस काल में साम्राज्य की आंतरिक अराजकता पर नियंत्रण पाया गया।

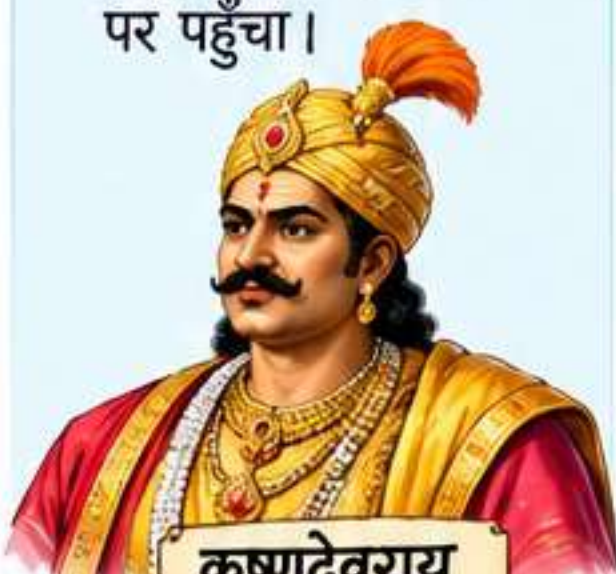


सालुव नरसिंह

तुलुय वंश

1505 - 1570 ई.

- वीर नरसिंह द्वारा द्वितीय बलापहार के उपरांत स्थापित।
- कृष्णदेवराय के काल में विजयनगर अपनी सैन्य, सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा।



कृष्णदेवराय

अरविदु वंश

1570 - 1646 ई.

- तिरुमल द्वारा पेनुकोंडा को केंद्र बनाकर स्थापित।
- यह काल साम्राज्य के क्रामिक विखंडन और पतन का गवाह बना।



पेनुकोंडा

तिरुमल

“विजयनगर - भारतीय इतिहास का दक्षिणी दीपस्तंभ”



संस्कृति | शक्ति | स्वाभिमान

3 प्रमुख शासक एवं उनकी उपलब्धियाँ

हरिहर प्रथम (1336 - 1356 ई.)

- 'दो समुद्रों का अधिपति' कहलाया।
- तुंगभद्रा घाटी पर अधिकार कर प्रशासनिक आधारशिला रखी।

बुक्का प्रथम (1356 - 1377 ई.)

- 'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक' की उपाधि धारण की।
- 1374 ई. में चीन के **मिंग सम्राट** के दरबार में एक दूत-मंडल भेजा।

मिंग सम्राट (चीन)

- मदुरै सल्तनत को जीतकर साम्राज्य में मिलाया।

इस विजय का विवरण बुक्का के पुत्र कुमार कंपना की पत्नी **गंगादेवी** ने अपनी संस्कृत कृति '**मधुराविजयम्**' में दिया है।

मदुरै

देवराय प्रथम (1406 - 1422 ई.)

- बहमनी सुल्तान फिरोज शाह के साथ '**सोনার की बेटी का युद्ध**' लड़ा।
- तुंगभद्रा नदी पर हरिद्रा बाँध बनवाकर राजधानी **हम्पी** तक नहरें निकलवाई, जिससे जल संकट दूर हुआ और कृषि को प्रोत्साहन मिला।

देवराय प्रथम

हरिद्रा बाँध

कृषि को प्रोत्साहन

- प्रसिद्ध इतालवी यात्री **निकोलो कॉंटी** 1420 ई. में इसके काल में विजयनगर आया।

निकोलो कॉंटी

देवराय द्वितीय (1422 - 1446 ई.)

- संगम वंश का सबसे प्रतापी शासक; इसे प्रजा '**प्रौढ़ देवराय**' और अभिलेखों में '**गजभेटकर**' (हार्थियों का शिकारी) कहा गया है।
- अपनी सेना के आधुनिकीकरण हेतु बड़ी संख्या में **मुस्लिम तीरंदाजों** को भर्ती किया, जागीरें दीं तथा उनके लिए **मस्जिद** का निर्माण करवाया।

देवराय द्वितीय

मुस्लिम तीरंदाज

मस्जिद

- फारसी राजदूत **अब्दुल रज्जाक** (शाहंरुख का दूत) 1443 ई. में आया। उसने लिखा -

"विजयनगर जैसी समृद्ध नगरी विश्व में आँखों ने न कभी देखी और न कानों ने सुनी।"

- साहित्य : संस्कृत ग्रंथ '**महानाटक सुधानिधि**' और बादरायण के '**ब्रह्मसूत्र**' पर वृत्ति लिखी।

अब्दुल रज्जाक

महानाटक सुधानिधि
ब्रह्मसूत्र (वृत्ति)

कृष्णदेवराय (1509 - 1529 ई.)

उपाधियाँ :

- आंध्र भोज
- अभिनव भोज
- आंध्र पितामह
- यवनराज स्थापनाचार्य



सैन्य अभियान :

- 1510 ई. में बीदर के सुल्तान **महमूद शाह** को पराजित किया।
- 1512 ई. में **रायचूर** पर अधिकार किया।
- 1513 - 1518 ई. में ओडिशा के **गजपति शासक प्रतापरुद्रदेव** को परास्त कर **उदयगिरि व कांडाविदु दुर्ग** जीते।

रायचूर



पुर्तगाली संबंध :

- पुर्तगाली गवर्नर **अल्बुकर्क** से मैत्रीपूर्ण संबंध।
- **भटकल** में पुर्तगालियों को दुर्ग बनाने की अनुमति दी तथा फारसी और अरबी घोड़ों के आयात पर एकाधिकार प्राप्त किया।

अल्बुकर्क

कृष्णदेवराय

सांस्कृतिक योगदान :

- अष्टदिग्गज : तेलुगु साहित्य के आठ सर्वश्रेष्ठ कवि इसके दरबार में थे (प्रमुख: **पेदन** - '**मनुचरितम्**' के लेखक, **तेनालीराम** - '**पांडुरंग महात्म्य**' के लेखक)।
- स्वयं की रचनाएँ : तेलुगु में '**आमुक्तमाल्यद्र**' (राजनीति एवं शासनकला पर आधारित उत्कृष्ट ग्रंथ) तथा संस्कृत में '**जाम्बवती कल्याणम्**' व '**उषा परिणयम्**'।

कवियों का रत्न समूह - अष्टदिग्गज

तेनालीराम

अन्य उपलब्धियाँ :

- अपनी माता **नागला देवी** की स्मृति में '**नागलापूर**' नामक नया नगर बसाया।
- हम्पी में **कृष्ण स्वामी मंदिर**, **हजार राम मंदिर** और **विठ्ठल स्वामी मंदिर** का निर्माण / विस्तार करवाया।

कृष्ण स्वामी मंदिर

हजार राम मंदिर

विठ्ठल स्वामी मंदिर